International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 12; December 2016; Page No. 81-82

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' में अंतर्जातीय–विवाह की समस्या

प्रमिला देवी

सहायक प्रवक्ता, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्री की समानता व स्वतंत्रता का समर्थन स्त्री विमर्श है। परम्परा से पुरूष को प्रधानता मिलने का कारण यही हो सकता है कि समाज–व्यवस्था का निर्माता पुरूष था। वर्तमान समय में नारी मुक्ति संबंधी अनेकों प्रयास किए जाते हैं। नारी जीवन से जुड़ी हुई अनेकों समस्याएं आज भी ज्यों की त्यों दिखाई देती है। बाल–विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, वेश्यावृति तथा अंतर्जातीय विवाह जैसी समस्याओं ने नारी जीवन को बहुत हद तक प्रभावित करते हुए उसे बद् से बद्तर स्थिति तक पहुॅचा दिया है। भारतीय समाज में स्त्री वस्तु सदृश रही है। उसका हस्तांतरण भी वस्तु के समान होता रहा है। वह दान की जाती है, उपहार स्वरूप दी जाती है। जीती और हारी जाती है। जब वह जिस पुरूष के अधीन होती है उसी की जाति उसे प्रदान कर दी जाती है। ''भारतीय समाज में न नारी का अपना कोई व्यक्तित्व रहा है, न जाति। वह ऐसा 'रत्न' है जिसे कहीं से भी उठाया जा सकता है और जिसके पास है, उसी की सम्पत्ति है। वे व्यक्ति नहीं 'चीज' हैं। जिन्हें लूटा, छीना और नष्ट किया जा सकता है, खरीदा और बेचा जा सकता है।''1

स्वयं को स्थापित करने के लिए स्त्री को लंबा, कड़ा संघर्ष करना पड़ा। स्त्री और पुरूष के प्राकृतिक भेद को स्वीकार करते हुए एक न्याय संगत समाज की स्थापना उसकी सही परिणीति है। नारी जीवन से जुड़ी हुई उपर्युक्त समस्याएं साहित्यकारों के साहित्य की विषय वस्तु रही है। हिंदी के अधिकांश कथाकारों ने भी नारी को केंद्र में रखकर रचनाएं की हैं और बदलते परिवेश में आधुनिक विचारधारा को अपनाते हुए नारी को देखने परखने की कोशिश की है। इन साहित्यकारों में महिला कथाकारों ने नारी मन की गहराई में जाकर नारी समस्याओं के प्रति उदासीनता व पुराने, कुहासे को छांटकर एक नई दृष्टि से नारी के अंतर्मन में झांकने का प्रयास किया है। लेखिका स्वयंनारी है, अतः नारी के स्वभाव, उसकी समस्याओं का सजीव–सक्षम व ईमानदार प्रस्तुतीकरण करने की क्षमता लेखकों की अपेक्षा उसमें अधिक रहती है। राजेन्द्र यादव भी समर्थन करते हुए लिखते हैं – ''पुरूष कथाकारों की तरह अपनी स्थिति और नियति के प्रति सामाजिक–मानसिक रूप से प्रबुद्ध इधर की कथा–लेखिकाओं के आने से पहले हिंदी कथा–साहित्य प्रायः हवाई, प्रियदर्शिनी और प्रदर्शनी नारियों से भरा रहा है। यह भी कहा जा सकता है कि सजीव व्यक्तित्व वाले नारी–पुरूष संबंधों के वास्तविक तनाव, लगाव और उन्हें निर्धारित करने वाले दबाव पहली बार सामने आ रहे हैं। इस दिशा में कृष्ण सोबती, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, निरूपमा, मालती जोशी के नाम लिए जा सकते हैं।2

स्वातंत्र्योत्तर महिला कथाकारों में आलोच्य लेखिका कृष्ण सोबती का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इन्होनें नारी और उससे जुड़ी समस्याओं को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। नारी जीवन से जुड़ी हुई अनेकों समस्याओं के साथ–साथ कृष्णा सोबती जी ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' में अंतर्जातीय विवाह की समस्या को प्रमुखता से उभारा है। खुले दिल दिमाग से विचार करें तो अंतर्जातीय विवाह जातिवाद को दूर करने में सहायक है। दहेज प्रथा को रोकने में सहायक है, योग्य जीवन साथी के चुनाव में सहायक है तथा बाल विवाह और विधवा विवाह की समस्याओं का हल है। परंतु भारतीय परिवार अपने सांस्कृतिक बंधनों में बंधे हुए हैं। विशेषकर जातीय भावना में आज भी बुजुर्ग वर्ग इन भावनाओं में इस कदर जकड़ा हुआ है कि किसी भी प्रकार के आधुनिक तर्क उन्हें रूढ़ियों से कटने– हटने नहीं देते। आज भी जात–पात, बिरादरी का सवाल उनके लिए सबसे पहले है। यही कारण है कि अनेक लाभ होने के बावजूद अंतर्जातीय विवाह हमारे समाज में आज भी सहर्ष स्वीकार नहीं। अपवादरूप में जो व्यक्ति अंतर्जातीय विवाह का कदम उठा भी लेता है, उसे परिवार और समाज की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। इसका स्पष्ट संकेत 'डार से बिछुड़ी' नामक उपन्यास में हैं। 'डार से बिछुड़ी' में पाशों की मॉ खत्री होने के बावजूद शेख से अंतर्जातीय विवाह करती है। परिणामतः उसके घरवालों को समाज द्वारा अपमानित होना पड़ता है, लोग उन पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं, ''बादशाहो, अब क्या शेख क्या बाम्हन! खत्रियों की बेटियॉ तो अब काबुल कंधार पहुॅचेंगी।''3 समाज से अपमानित घर वाले दिन–रात पाशें की मॉ को कोसते रहते हैं। उसे बद्दुआ देते हैं और सदा के लिए अपने घर के दरवाजे उसके लिए बंद कर देते हैं।

सामाजिक सत्य है कि परिवार को किसी एक सदस्य द्वारा किए गए अंतर्जातीय विवाह का मुआवजा न सिर्फ उस व्यक्ति को बल्कि आगामी पीढ़ियों को भी भरना पड़ता है। पाशों की मॉ द्वारा उठाए गए कदम से परिवार तो अपमानित होता ही है पर उसकी बेटी पर भी बद्चलनी के आरोप लगने लगते हैं। घर से बाहर आते–जाते गली के लड़के पाशों पर फिकरेबाजी करते हैं। हर कोई उस पर उंगलियां उठाता है। बाहर वाले ही क्या घरवाले भी पाशों को हर पल व्यंग्यबाणों से छेदते रहते हैं। वक्त बेवक्त उसकी मॉ का नाम लेकर पाशो को अपमानित करते रहते हैं। कभी मामियां ताना देते हुए कहती है – ''नखरे तो देखो लाड़ो के! पीढ़ी ले भांडे मलने बैठी है। अरी बुरों की, पीढ़ी पर बैठती हैं भले घर की बहू–बेटियां.... ।''4 तो कभी नानी जली कटी सुनाते हुए कहती है– अरी नरको में वास हो तेरा और तुझे जन्मने वाली का। उस शोहदे से ऑख लड़ाने चली! जैसी कुलच्छनी मॉ थी ..... ।''5

पाशों के लिए उसके अपनों की सारी संवेदनाएं समाप्त हो जाती है। बिना गलती के उसे हर वक्त डॉटा फटकारा जाता है, घर की बेटी होने के बावजूद उससे नौकरानी जैसा व्यवहार किया जाता है। यहां तक कि गली के आवारा लड़के

करीम द्वारा पाशों के संबंध में कही गई बात पर विश्वास किया जाता है लेकिन स्वयं पाशो से कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं समझी जाती और बदचलन मानकर, मार डालने का षड़यंत्र रचा जाता है। इस सबके पीछे पाशो का अपना कोई व्यक्तिगत दोष नहीं, दोष है तो बस इतना कि वह उस मॉ की बेटी है जिसने जाति के बंधन तोड़कर दूसरी जाती के शेख से विवाह किया है। डॉ. उषा यादव यथास्थिति को और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखती है–''समाज की घिसी–पिटी रूढ़ियां, जड़ संस्कार और मृतप्रायः मान्यताएं भी पारिवारिक जीवन के लिए अभिशाप बन जाती हैं। कृष्णा सोबती के 'डार से बिछुड़ी' की पाशो ननिहाल में सिर्फ इसलिए यातनाएं झेलती है क्योंकि उसकी मॉ जाति धर्म की सीमाएं तोड़कर शेख जी के यहॉ चली गई है। फतेह अली के बेटे करीम के पास पाशो का रूमाल देखकर तो उसके मामा इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि उसके मुॅह से कोई सफाई या दलील सुने बिना उसके कत्ल की योजना बना लेते हैं।''6 अर्थात् हमारा समाज शिक्षा और आधुनिकता के प्रसार–प्रचार के बावजूद जातिगत बंधनों से मुक्त नहीं हो पाया है। यहॉ तक कि लड़की को अयोग्य, बूढे वर से ब्याह देना मंजूर है लेकिन दूसरी जाति के वर के बारे में सोचना भी अपराध है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि नारी जीवन की विसंगतियों को विविध आयामों में अनुभूति की गहराई तक ढ़ालने का प्रयास कृष्णा जी ने अपने उपन्यासों में किया है। स्वातंत्र्योतर भारतीय नारी की छटपटाहट और विविध संघर्षो को इन्होंने अपने उपन्यासों में अलग–अलग प्रकार से अभिव्यक्त किया है। बाह्य सामाजिक परिस्थितियॉ व नारी के अंतर्जगत के मध्य जो सूक्ष्म द्वंद्व है, वह कृष्णा जी के उपन्यासों में उभरा है। इन्होंने समाज द्वारा निर्धारित नारी–मूल्यांकन के मानदंडों को नकारकर, नारी को स्वतंत्र, व्यक्तित्व संपन्न, जागरूक, प्रबुद्ध नारी के रूप में देखा है और समकालीन समय–संदर्भो की कसौटी पर नारी जीवन को परखा है।

संदर्भ

1. आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, पृ. 33
2. हंस (दिसम्बर 1996) में संकलित अरविंद जैन का लेख, पृ0 79
3. डार से बिछुड़ी, कृष्णा सोबती, पृ. 27
4. वही– पृ. 10
5. वही– पृ. 15
6. हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, डॉ. उषा यादव, पृ. 164